श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विभाग, रोहतास महिला कालेज सासाराम
वर्ग - बी०ए० पार्ट - I 'प्रतिष्ठा'
पत्र - प्रथम, यूनिट नं० - 01
राजनीतिक शास्त्र, डॉ० वीरकेश्वर प्रताप सिंह
दिनांक - 07-07-2020

राजनीति शास्त्र का क्षेत्र (1)

भूमिका :-

प्रत्येक शास्त्र का अपना क्षेत्र होता है। इसकी व्यापकता उस शास्त्र की विषय वस्तु पर निर्भर करती है। लेकिन नये शास्त्रों के क्षेत्र का निर्धारण करना एक मुश्किल काम है। राजनीति शास्त्र का क्षेत्र अब भी अनिश्चित सा तथा विवादास्पद है। इसके क्षेत्र की जानकारी के लिए दो दृष्टिकोण अपनाये जाते हैं (i) परम्परावादी (ii) आधुनिक।

(1) **परम्परावादी दृष्टिकोण :—** कुछ विद्वान इस विभाग को राज्य का अध्ययन बतलाते हैं। अनेक लोगों का कहना है कि राजनीति शास्त्र के क्षेत्र में राज्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन होता है। लेकिन कुछ लोग दोषपूर्ण बतलाते हैं क्योंकि इसमें सरकार का कहीं उल्लेख नहीं है। अतः विभिन्न विचारकों ने विभिन्न मत प्रकट किये हैं कुछ लोगों का कहना है कि राजनीति शास्त्र केवल राज्य का अध्ययन करता है तो कुछ लोगों का

(2) कहना है कि राजनीति शास्त्र सरकार के बिना इसका क्षेत्र अधूरा ही रह जायेगा। अन्त में इन सभी बातों को स्पष्ट करते हुए विलोबी स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि राजनीति शास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत मनुष्य के समस्त राजनीतिक जीवन तथा मुख्यतः राज्य और सरकार आते हैं। इसलिए इनके अलग-अलग अध्ययन किया जायेगा।

(3) **राजनीतिशास्त्र का क्षेत्र :—** प्राचीन यूनानी राजनैतिक चिन्तकों ने राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र को बहुत व्यापक बनाया है। इसके क्षेत्र के अन्तर्गत उन्होंने व्यापार राज्य से सम्बन्धित सारे तथ्यों को सम्मिलित किया है। प्राचीन यूनानी चिन्तकों में प्लेटो और अरस्तु का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने राज्य और समाज में भेद नहीं किया है। उनके विचार में राज्य ही सर्वस्व है। राजनीतिक संस्था के साथ-साथ राज्य एक नैतिक संस्था भी है।

आधुनिक युग में राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र का वर्णन हम इस प्रकार से कर सकते हैं

(1) **मनुष्य के संबंध में :—** राजनीतिशास्त्र मानव जीवन और उसके विभिन्न कार्यों का अध्ययन करता है। हम जानते हैं कि राज्य सरकार तथा विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं का आधार मनुष्य ही है। मनुष्य
(4) के अभाव में राज्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। अतः राजनीतिशास्त्र का मुख्य विषय मनुष्य ही है। राजनीतिशास्त्र हमें बताता है कि मनुष्य और राज्य में क्या सम्बन्ध है? मनुष्य के अधिकार और कर्तव्य क्या हैं। मनुष्य को एक राजनीतिक प्राणी के रूप में अध्ययन करने वाला शास्त्र राजनीतिक शास्त्र ही है।

(2) **राज्य के प्रसंग में :—** गार्नर के शब्दों में "राजनीतिशास्त्र का प्रारम्भ और अन्त राज्य से होता है।" यह राज्य के सभी पक्षों तथा पहलुओं का अध्ययन करता है। गेटेल ने कहा है कि "राजनीतिशास्त्र राज्य के ~~ऐतिहासिक~~ भूतकालीन स्वरूप का ऐतिहासिक, राज्य के वर्तमान या आधुनिक स्वरूप का, राज्य के भावी स्वरूप का, विभिन्न राजनीतिक क्रियाओं का, विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं का एवं विभिन्न राज्य संस्थाओं या संगठनों का अध्ययन करता है।" अतः हम कह सकते हैं कि —

क्रमशः